R.N.I.- UP-HIN/2001/3996
ISSN- 2581-6128

स्थापन दिवस के 26वें वर्ष में प्रवेश

शहर समता

(हिंदी साप्ताहिक)

शोध पत्र

www.shaharsamta.com

'कर्मक्षेत्र रणभूमि यही है, मानव हो तुम कर्म करो।
कर्म से कभी विमुख न रहना, मन में यह संकल्प करो।'-
उमेश श्रीवास्तव

संस्थापकः स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 श्रीमती साधना श्रीवास्तव
सम्पादकः उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

शुभा भौमिक विशेषांक

वर्ष 26 | अंक 5 | रविवार, इलाहाबाद, 21 जून 2026 | पृष्ठ 4 | विशेषांक मूल्यः 3 रू0

❖ संपादकीय

इस बार शुभा भौमिक

उमेश श्रीवास्तव
संपादक

रंग बिरंगी इस दुनिया में ,
कविता से संसार है बनता ।
कोमल चित्त, मनभावन अवसर ,
कविता से व्यवहार है बनता ।

तो बात हो रही है बिलासपुर की शुभा भौमिक की । बिलासपुर में बसी, शुभा भौमिक के जीवन के सारे सोपान इसी जगह बीते। कविता के प्रति रुझान बालपन से ही था। कविता-लिखना ही उनकी ऐसी ताकत बनी कि उन्होंने जीवन के हर उतार-चढ़ाव को बड़ी मजबूती के साथ सहा। आज कविता के क्षेत्र में बिलासपुर की एक सार्थक हस्ती के रूप में शुभा भौमिक की पहचान बन चुकी है। उनकी रचनाओं में हर प्रकार के भाव मिलते हैं। उनकी रचनाओं की कुछ बानगी देखिए ।

पहले बानगी

उठ जाग, खोल अपनी बंद पलकों को
विश्वास जगा खुद में, अब तू नहीं अशक्त,
सात घोड़े के रथ पर सवार, आ रहा सूरज भी
उसी सूर्यसे शौर्य लेकर, कर अस्तित्व सशक्त...

दूसरी बानगी

मां, इतनी खरी थी तू
कि तुझसे जो टकराता
वह खरा होकर ही
वापस लौटता...

तीसरी बानगी

सुमिरन तेरा मैं करता रहूं
तुझ में ही बस मैं डूबा रहूं
कमजोर है मन अनजान है राहें
तेरी उंगली थामे चलता रहूं...

मई माह 2026 का सावित्री देवी स्मृति साहित्य सम्मान देते हुए संस्था प्रसन्न है। संस्था आपके सुंदर भविष्य की कामना करता है । अंक कैसा लगा प्रतिक्रिया जरूर दीजिएगा ।

अंत में -

जो कुछ लिखा है आपने ,
सुंदर और सूजान ।
ऐसा ही लिखती रहे ,
आप बनेगी महान ।

- उमेश श्रीवास्तव

❖ जीवन संघर्ष

आत्म संघर्ष

शुभा भौमिक
कवयित्री

ङजीवन यात्रा वृतांत-ङ

बचपन से ही मुझे पढ़ने लिखने का बहुत शौक था। माता-पिता की चार संतानों में मैं सबसे बड़ी थी। मां कोलकाता में पली-बढ़ी थी, पर हिंदी पढ़ने में उनकी बेहतर रुचि थी। हम भाई बहनों को अक्षर ज्ञान उन्होंने ही दिया था। पिता मध्य प्रदेश के नैनपुर में रेलवे में नौकरी करते थे। वहीं मेरा जन्म हुआ। मेरी उम्र जब एक वर्ष की थी, उस वक्त उनका तबादला छत्तीसगढ़ के बिलासपुर जिले में स्थित अकलतरा में हुआ। मेरा बचपन अकलतरा में ही बीता। मेरे पिताजी ने मुझे बचपन में हीअंग्रेजी की शिक्षा दी। उनके सानिध्य में मुझे अंग्रेजी का अच्छा ज्ञान प्राप्त हुआ। मेरी शिक्षा हिंदी माध्यम में हुई। हिंदी साहित्य में मेरी काफी रुचि थी। स्कूल ी शिक्षा के बाद जब कॉलेज में प्रवेश किया उस वक्त अपनी पढ़ाई करते-करते भाई बहनों को भी पढ़ाती थी। स्नातक की डिग्री के बाद अकलतरा के 'सरस्वती बाल मंदिर' में शिक्षिका बन गई। वहां दो साल तक शिक्षिका रही, फिर मेरी शादी बिलासपुर में तय हो गई। उस दौरान उस वक्त की प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या हो गई थी। उनकी हत्या ने मुझे अंदर तक हिला दिया था, काफी व्यथित हो गई थी। उस घटना के बाद मैंने पहली कविता रची थी।

विवाह के बाद दो बेटों की मां बन गई थी। मेरे सास ससुर कुछ पुराने ख्यालात के थे। पति और देवर को भी लेखन पठन में खास रुचि नहीं थी। मुझे शिक्षिका बनने का बहुत शौक था, पर मौका ही नहीं मिला। बेटों को घर में ही पढ़ाकर अपनी रुचि पूरा करती थी।

शादी के बाद भी मैं कविताएं लिखना नहीं छोड़ पाई। अपने आसपास के माहौल और अपनी जिंदगी के अनुभवों से प्रेरित होकर मैंने खूब कविताएं रची। अपने अंदर चल रहे उमड़-घुमड़ को मैं रसोई घर के कैलेंडर पर कुछ-कुछ लिखकर शुरुआत करती थी। फिर मौका देखकर अपनी डायरी में पूरी कविता बनाकर उतारती थी। वैसे कविता रचने की यात्रा अभी भी थमी नहीं है। कुछ ना कुछ अभी भी लि ख ही लेती हूं।

मैं ईश्वर का तहे दिल से धन्यवाद करना चाहती हूं कि उन्होंने मेरे अंदर ऐसी क्षमता बख्शी है कि मैं अच्छी से अच्छी कविताएं रच सकूं।

धन्यवाद

❖ कवितायें

शुभा भौमिक
कवयित्री

अंतर इनका उनका

अट्टालिकाओं के चकमक...
तेज... दीपमाला,
उनके पीछे... उजले चेहरे...
दिखता सभी को जगमगाते चेहरे...
पर -
असंख्य दीपमाला... चुंधियाई आंखें...
देख नहीं सकते...
सिवा अपने... किसी और को...,

उस झोपड़ी के द्वार पर रखा...
वह टिमटिमाता...
अकेला नन्हा सा दीपक...
दीपक के पीछे... अंधेरे में डूबे चेहरे...
पर -
सामने है... गहन अंधेरे को भगाता...
धुंधलका उजाला...
मगर सब कुछ...
स्पष्ट... स्वच्छ... शांत... निर्मल...।

'हिंदी हूं मैं'

हिंदी हूं मैं...
देश के जन-गण को जोड़ने वाली
एक अद्भुत सेतुबंध हूं...
मिसाल हूं अपनेपन की
क्योंकि, मैं मातृभाषा हूं...
लेख हो या गद्य हो...
कहानी हो या कविता हो...
भर लेती हूं सभी को अंक में सहज ही
क्योंकि, मैं एक सहज सरल अभिव्यक्ति हूं
सहेली हूं मैं...
उतार लेती हूं भावनाओं को
ज्यों की त्यों, बड़े प्यार से...
दिलों को जोड़ने वाला
कलात्मक पुल हूं मैं...
संस्कृति की धरोहर को गोद लिए
चलती हूं, बचाने के लिए उसे
उतरती है पन्नों पर, दिलों की उमड़-घुमड़
ज्यों की त्यों, क्योंकि
सरस हूं... सहज हूं... सरल हूं...
दिग-दिगंत को एक धागे में पिरो कर
साथ लेकर, चलती हूं मैं

❖ कवितायें

शुभा भौमिक
कवयित्री

हां! हिंदी हूं मैं...
हां! हिंदी हूं मैं...।

एक पाती दिव्यांग जनों को

उठ जाग, खोल अपनी बंद पलकों को
विश्वास जगा खुद में, अब तू नहीं अशक्त,
सात घोड़े के रथ पर सवार, आ रहा सूरज भी
उसी सूर्यसे शौर्य लेकर, कर अस्तित्व सशक्त...

अंतर्मन की चक्षु से, अब तू देख जरा
उस दिव्य ज्योतिर्पुंज को अनदेखा न कर,
सूरज के सातवें घोड़े की पदचाप, सुन जरा
उमंग जगाती उन तरंगों को अनसुना ना कर...

खुद पर हो विश्वास, और भरोसा हो पूरा
आसमां को छूते तेरे इरादे हो बुलंद,
लाख कमी है तो क्या, तेरे हौसलों से
झूमेगी सृष्टि...झूम उठेगा दिग-दिगंत...

तूने जाना खुद को ही हीन और कमजोर
नहीं है ऐसा कुछ भी, जैसा तूने माना है,
गढ़ा है विधाता ने जो तुझे इस रूप में
कुछ ना कुछ तो उसने, तुझमें जाना है...

अंतर में इक बार अपने, डूब कर तो देख
वहां कोने-कोने में, खजाने भरे पड़े हैं,
अपनी किस्मत आप लिख कर तो देख
देख! ताज पे तेरे, कितने रत्न जड़े पड़े हैं...

अनजान है अपनी शक्ति से तू खुद ही
तेरी कमियों में ही, छिपी पड़ी हैंश्र खूबियां,
लिख ले कामयाबी की कहानियां खुद ही
खुद देखना एक दिन, झूम उठेगी दुनियां...।

ममतामयी सितारा

सितारा...
जो चमकता था दूर गगन में,
तोड़ लिया किसी ने,
सितारा...जो मिट चुका है
अमिट चमक अपनी छोड़ गया है,
इस सूने चमन में...
वो चमन, जिसने छलनी किया
उसके अमन को,
उसी चमन के फूलों को उसने,
सहारा दिया सदा...
मां की तरह दुलारा सदा...
रक्षा किया रक्षक की तरह सदा...
क्या-क्या नहीं सहा उसने
इस चमन के लिए...
कांटे बटोरे दामन में उसने,
उस चमन के लिए जिसने,
बख्शा नहीं, उसके अमन को...
सितारा, वो ममतामयी
डूब चुका है कहीं...
क्षोभ ,पश्चाताप की दरिया में,
छोड़ गया हमें यहीं...
उसी दर्द के सहारे चलना है,
अब उसे भुलाना नहीं...
छोड़ गया अपनी अमिट चमक,
अब उससे मुकरना नहीं...
चलना है उसी चमक के सहारे,
अब कहीं भटकना नहीं...।

फलता-फूलता पर्यावरण

वृक्ष का वह गिरता पत्ता
गिरता धूल में मिल जाता,
परिवर्तन की परंपरा को वो
नित्य समय पर यूं ही निभाता...

अगर ना झरे जो वह बूढ़ा पत्ता
पकड़ा ही रहे गर वो शाख को,
कैसे जन्म देगा वह शाखा
नई कोंपलों की नई पांख को...

शाख रह जाए हरा-भरा सदा ही
मालूम भली-भांति उस पात को,
वो नित झरता-मिटता, जीवन देता
नव-कोंपल के उस नए पात को...

वृक्ष तो बिल्कुल सहज ही रहता
पोषक दे, पर्यावरण पूरन करता,
फलता-फूलता उपकार ही करता
दुर्बुद्धि मानव बल्कि क्षरण ही करता...

अब भी जाग, बचा ले खुद को
इस धरा का ऋण है तुझ पर,
सहेज तू, यूं पर्यावरण को आज
नाज़ करेगी, यह धरा भी तुझ पर...।

गर्मी की शुरुआत

गर्मी के शुरुआत की दस्तक लेकर
लो आ गया अप्रैल का महीना,
गर्म हवाएं सता रही हर किसी को
टप टप बरसे हर किसी का पसीना...,

अब तो बस गर्मी की शुरुआत यही है
और सुबहो-शाम फिर भी है राहत,
पर दोपहर को गरम धूप है सताती
उस वक्त फिर गर्मी से कहां है राहत...,

छांव देते दरख्तों को मानव ने काटा
जो धूप से सड़कों को ठंडक से थे भरते,
सताती है अब राहगीरों को है गर्मी
उनकी गलती उन्हें सताती क्या करते...,

प्रकृति का दोहन अभी भी जो करता
अभी ना माने जाने आगे कब सुधरेगा,
प्रकृति तो कुछ नहीं कहेगी चुपचाप सहेगी
पर समय अपने समय पर हिसाब जरूर लेगा...।

मैं किसान

बोता हूं बीज सपनों के
कुछ अपने और
अपनों के अरमानों के
कुछ जिंदगी के ताने-बानो के...
सजीले सपने जो
संजोए हैं मैंने
आशाओं से भरी
इस कोमल से मन में...
हां! संजोया है एक सपना
धन-धान्य से हो भरा पूरा
कोठार मेरा...
खेत खलियान की हरियाली से
मैं भी हो जाऊं हरा हरा...
खेतों में झूमती वो
हरी-भरी सी बालियां...
मेरा मन भी झूमे खुशी से
खिल उठेंगी दिल की कलियां...
हां! देखा है सपना,
पत्थर के दो पाटों के बीच
दरदराते अनाज...
ढेंकी के ताल पर नाचते
चावल के दाने...
सपना तो ये भी देखता हूं
कि अबके अनाज के ऐवज में
आती कमाई से
कर लूं बेटे की शादी
और साथ पूरी कर लूं,
कर लूं नयी बहुरिया की अगुवाई...
पिता हूं मैं
चिंतित हूं तनिक
बढ़ती उम्र बिटिया की...
अब के बरस
एक और सपना है मेरा
कर लूं बिटिया की भी विदाई...
पर इक आशंका छोटी सी
की वर्षा की वो अमृत बूंदें
धरती से मिल पाएंगी
समय पर...?
हाथों में बीज आशाओं के
नजरें आसमान पर
इस आस में
की होगी अभी झमाझम
भीगेगी धरती
गीली लबालब मिट्टी
समा लेगी सारे बीज
अपनी गोद में...
पर देखूं तो
कुदरत की कलम ने
क्या लिखा है विधान
अगले बरस का...
जो भी लिखा होगा ईश्वर ने
सही लिखा होगा...
सपना देखा तो है
पर जो भी हो
स्वीकार है...
तेरी विधि का विधान
सर आंखों पर...।

रोशनी और 'रोशनी

मस्ती से मस्त-उम्मत्त-
बढ़ता हर कदम,
पहचान नहीं रोशनी और
'रोशनी' की

रोक दो उस कदम को,
बढ़ रहा जो रोशनी की ओर...
वह रोशनी, मंजिल नहीं...
साहिल नहीं... जिंदगी नहीं...
सुख नहीं...,
वह तो केवल, धोखा है...छलावा है... मरीचिका है...
दिखावा है...

मोड़ दो उस कदम को
जिंदगी की 'रोशनी' की ओर...
दिखाओ उन्हें उगते सूरज की,
श्वेत... उज्जवल...
निर्मल...'रोशनी',
डूबते सूरज की-
शांत... पावन...
शीतल... 'रोशनी'...,

राह प्रशस्त करो तुम,
ले जाओ उन्हें,
उज्जवल... पावन...
'रोशनी' की ओर...,
पहचान कराओ, मरीचिकी...
असत्य... रोशनी की,
बहकते कदमों को मोड़ दो-
सूरज के, सत्य की...
शीतल... निर्मल...
'रोशनी' की ओर...।

अंत निश्चित है

आग उगलती झुलसाती गर्मी
मौसम के आबो-हवा की
अफरा-तफरी,
लुकाछिपी सूरज की... चांद की...
कानाफूसी पांच तत्वों की...
कदर किया नहीं...
मान दिया नहीं...
इंसाफ हो कैसे...??
घटता जा रहा कद
धीमे-धीमे धरा का...
हल्की-फुल्की ना रही,
हवा भी अब तो...
कहां रही पवित्र,
वह बारिश की बूंदे...?
जाने कहां गई,
उनकी पवित्रता... कोमलता...?
सूरज का बढ़ता रौद्र...
चांद की घटती चंद्रकला...
दरकती कोख धरती की...
डोलती... फूट पड़ती...
कौन है दाई...??
रूद्र रूप सागर का...
लीलती धरा को धीमे-धीमे,
कौन है दाई...??
विशाली वर्षा झर झर झरती...
घटती प्राण वायु... घुटता दम...
कौन है दाई...??
छलनी होता आकाश,
छेद जाती विषैली हवाएं,
आकाशीय परतों को...
धूसरित हवाएं लांघ जाती,
सुरक्षा चक्र... कौन है दाई...??
'मैं मानव'...अभी न जागा,
अंत निश्चित है...।

मन... न भटक अब

मन जाता कहां
रुकता नहीं पल भर भी क्यों...
बता कहां है तेरा ठौर
तू जाता किस ओर...

रहता क्यों अशांत
करता क्यों है उथल-पुथल...
शांत बैठ, कर विचार
मचाता क्यों तू शोर...

क्यों भटक रहा
निरर्थक इस द्वार, उस द्वार...
रह जाएगा भटकता
कोई ओर ना छोर...

ठहर जा जरा
देख, मंजिल है कदमों पे तेरे...
सांस ले ले, घड़ी-दो-घड़ी
अब भटकना छोड़...

होगा कोई कांखी
ठहरेगा, बस ठहरेगा इसी छांव...
न भटकेगा अब वो कहीं
मिल ही जाएगा ठौर...

छंट रहा अंधेरा
बस टूटने को है तम का घेरा...
छाता जा रहा धुंधलका
अब आने को भोर...

तू ही तो है वही
डूब कर तो देख, इक बार खुद में...
जप ले खुद को...बस खुद को
मिल जाएगा तुझे, तेरा ठौर...
मिल ही जाएगा तुझे, तेरा ठौर...।

'मां'

मां, इतनी खरी थी तू
कि तुझसे जो टकराता
वह खरा होकर ही
वापस लौटता...

मां, इतनी हंसमुख थी तू
की रोता हुआ भी कोई आता
वह पल भर में मुस्कुराता
हंसमुख हो जाता...

मां, इतनी सरल थी तू
की कठोर-कठिन व्यक्तित्व भी
नतमस्तक होकर
सरल हो ही जाता...

मां, इतनी प्यारी थी तू
कि रुखे से रुखा हृदय भी
तेरा पवित्र प्यार पाकर
गदगद हो जाता...

मां, इतनी करुणा थी तुझमें
कि किसी को लेशमात्र भी

❖ कवितायें

शुभा भौमिक
कवयित्री

तकलीफ ना देकर
चली गई उस अनंत यात्रा में
जहां से लौट कर
कोई वापस आता ही नहीं...

मां तुझको प्रणाम...

वह है बस, यहीं-कहीं

इंतजार उसका, आज मैं क्यों कर करूं
जो रच बस गया हो, हर कण-कण में
एहसास दिलाता है इधर-उधर हर कहीं
मौजूद है वो, हर पल और क्षण-क्षण में,

यहीं पे कहीं, हर कहीं, शामिल है वो
लिख दिया है उसने, वो क़रार उसका
चला गया, साथ छोड़ कहीं और तो क्या
हवाओं में बिखरा सा है इकरार उसका,

झूम रही घटाएं उसका ही नाम लेकर के
बह रही हैं बंदिशें, जो उसके ही तरानों के
यूं कैसे कहें, कि अब वो रहा नहीं जहां में
जो गूंज रहा, कोना-कोना उन वीरानों में,

वो गया नहीं, वो है यहीं...बस यहीं-कहीं
हर-एक दिल को पढ़ लो, वो मौजूद है वहीं
वो पसर गया, यूं हवाओं में... फिजाओं में
सरसराहट हवा की सुन लो, वो मौजूद है वहीं,

हस्ती मिट नहीं सकती, यूं ही चले जाने से
हर-इक पत्थरों ने जो तराशा है नाम उसका
हर दिल को सजाया उसने, यूं ज़ाया हो कैसे
हर दिल में गूंज रहा है यूं ही नाम उसका... ।

कुदरत की कुदरती.... रहने दो यूँ ही

धुआँ सा उठने लगा
है आग जलने लगी,
लो, बलवा हो गया...
न रोको पंछी को..... गाने दो,
पंछी कहाँ रुकेंगे, वो तो गाएंगे।

आँखे पथरा गयीं
स्पंदन... थम गया,
खो गया सब कुछ...
न बांधो तरानों को... झूमने दो,
तराने कहाँ बंधेगे, वो तो झूमेंगे।

हम यूँ बहक गए
गांव-गांव डूब गए,
वो फिर सहम गए...
न रोको नदी को..... बहने दो,
कहाँ रुकेगी नदी, वो तो बहेगी।

दरख़्त उखड़ गए
घोंसले उजड़ गए,
बियाबान सहम गए....
न रोको बादलों को..... बरसने दो,
बादल कहाँ रुकेंगे, वो तो बरसेंगे।

दरीचे... बंद हैं
बंद हैं खिड़कियां,
छा गईं वीरानियाँ...
न रोको बयार को..... बहने दो।
कहाँ रुकेंगी बयार, वो तो बहेंगी।

बिजलियाँ गिरने लगीं
आँधियाँ चलने लगीं,
बादल फटने लगें.....
न जगाओ झील को..... सोने दो
झील तो शांत है, शांत ही रहेगी।

न रोको कुदरत को...
न टोको कुदरत को...
न बांधो कुदरत को...
कुदरती रहने दो, यूँ ही कुदरत को
कुदरत तो करिश्मा है, होकर ही रहेगा ।

देवाधिदेव, हे! सूर्य देव

आलोक पथ-गमन दिनकर का
होता उत्तरायण धीमे-धीमे...
कर-जोर करती वसुधा नमन
आए नभ पर हे! कृपानिधि
हे ! तेजोमय, हे! तेज पुंज...
हे! अंशुमान, हे! ज्योतिर्मय
ओजस करते धरा को नित-नित
नित दरस देते, हे! कृपामये
नित्य करते नवसृजन सुबह का
हे! ओजमये, हे! दयामये...
ऊर्जित अश्व के रथ पे सवार
अंबुज बिराजे, हे!अंशुमाली...
प्रातः नभ में चमके ज्यों हीरक
हे! दिव्यमये, हे! भानूशाली...
किया सृजन नव संक्रांति का
प्रति-नंदन मकर संक्रांति का...

नए वर्ष के नए मुकाम पर

मुट्ठी भर रेत बिखर चुकी हैं
पल भर में,
देखते ही देखते समा गईं
तीन सौ पैंसठ कड़ियां
भूत भंवर के काल गर्त में,
प्रबल इच्छा थी, या यूं कि
इक वादा था- घर जुड़ेंगे, फूल खिलेंगे,
आंगन में फिर से...
ईंटे सजी, गारा चढ़ा, यू घर जुड़ा...
खिल उठा आंगन भी
फूलों की क्यारियों से...

मगर यह क्या...
टूट गई चरमराकर
कमर की सारी हड्डियां, भीतर ही भीतर,
शल्य क्रियाएं चली, हड्डी से हड्डी जुड़े,
दुरुस्त कमर लिए उत्साह उमंग लिए
चले थे घर के साए में, पर यहां...
यहां तो पड़ी हैं चंद ईंट गारों का
टूटा बिखरा मिश्रण, और फूल...
फूलों की मुस्कान भी
बलि चढ़ गईं कीमतों की...

हर बड़ा कर देखा झांक कर मुट्ठी में,
रह गए थे चंद कण रेत के,
बिखर गए वह भी पल भर में,
निकलने लगी अंतर से मातमी चीखें
दब गईं वे अंतर में ही...

मुट्ठी भर रेत लिए खड़े हैं फिर से,
नए वर्ष के उसी मुकाम पर,
बस तारीखें बदल गईं, मुट्ठी में जकड़ी
रेत की तीन सौ पैंसठ कड़ियां
शुभकामनाओं की बरसात लिए
उत्साहित अल्हादित मन
स्वागत करता नववर्ष का...

फिर वही वादा...
फिर वही इच्छा...
रहेंगे संवरे घर के साए में
दुरुस्त कमर लिए,
यह तो अगला मुकाम ही बताएगा
कि हम कहां गिरे...।

वो जो इक कविता'

दिल की खरगोशियां जो
चमकीली मोतियों सी
उतरती हैं कागज की सरजमीं पर
इक हसीन कविता बन कर...
उभरते हैं कुछ,
मन की मस्तियों के चित्र...
दिल की नादानियों की कहानियां...
गुज़रे जमाने के,
गुज़रते वर्तमान के,और
आती हवाओं के
सरपरस्ती की बेखौफ़ रंगीनियां
बह कर आ जाती हैं
यूं ही, कविता बन कर...
फिजाओं में बिखर जाती है
आती-जाती हवाओं की
खुशबूदार सरसराहट...
उभर आती हैं सुकून देने वाली
दिलकश चित्रकारियां...
कुछ टीस मन की...
कुछ बुलबुले हंसी के...
कुछ दास्तां अंधेरी रात की...
तो कुछ दिन के उजालों की
सरगर्मियां...
कागज़ के पन्नों पर छा जाती है
कविता बन कर...
कितना दिलकश...
कितना रंगीन...
नवजात की किलकारियों सा
खुशगवार...
अपने पैदाइश की
खुशनुमा छाप छोड़ जाती है
खुशियों का सैलाब लिए
जब पैदा होती है
किताब के पन्ने पर
इक कविता बन कर...।

सुमिरन तेरा

सुमिरन तेरा मैं करता रहूं
तुझ में ही बस मैं डूबा रहूं
कमजोर है मन अनजान है राहें
तेरी उंगली थामे चलता रहूं...

हर-पल हर-क्षण तू साथ मेरे
विश्वास है पूरा दिल को मेरे
थामा है हज़ारों हाथों से
सदा है भरोसा ये साथ मेरे...

हर काया पे तेरा वासा प्रभु
हर तृण में तमाल में तू ही तू
अली में तू हर कली में तू
धूली के हर रजकण में तू...

ये दुनिया माया का जाल प्रभु
माया के पदारथ क्या मांगू
सब कुछ इस दर से मिल ही गया
अब और कहीं मैं क्यों जाऊं...

हे नाथ दयालु कृपा करो
चित्त में तेरा ही ध्यान रहे
भक्ति की वो शक्ति दो प्रभु
तेरी भक्ति में मन ये लीन रहे...।

ऐसी होती है कविता

कविता बोलती है
अंतर्मन को तोलती है,
कवि हो या पाठक
हरेक के दिल को टटोलती है...

अंतर्मन की कुछ बातों को
बड़े प्यार से सहेजते हुए,
कागज के पन्नों पर फिर
ज्यों का त्यों उतारती है...

कवि के मन को पढ़कर वो
उसके दिल का हाल बोलती है
हौले से फिर उसके दिल को
वो बड़े प्यार से सहलाती है...

हृदय के अंतःस्थल को
तब स्पर्श करती हुई,
वो दिलों के अरसों से
बंद पड़े किवाड़ खोलती है...।

'कुछ खास... ये मधुमास'

सावन ने चुपके से कहा
'मैं आऊं'
मैंने कहा- 'चुपके से क्यों' ??
शंख का निनाद कर ले
ढोल, ताशे, नगाड़े, बजा...
हरियाली की कर-ताल लेकर
रंग रंग के फूल सजा... अरे!जरा रुक तो...

धिनक-धिनक-धिन जरा झूम लूं
जरा संवर लू...मंगल गालूं...,
सजाकर अल्पना इक आंगन में
इक आरती की थाल सजा लूं...

मैंने कहा - 'पता है... कौन आ रहा' ?
सावन ने पूछा- 'कौन... कौन... ?

स्वागत को तेरे, अरे! ओ सावन...
आ रही है, मेरी प्यारी सखियां,
परियों को भी वो दे-दे मात,
इतनी हैं सुंदर मेरी प्यारी सखियां...

अरे सखियां मेरी आ ही चुकी हैं
दिल थाम ले अब तू ओ सावन,
मन-मयूर मेरा नाच उठा है
कर दे उल्लास का उत्प्लावन...

इस सावन में... अरे! ओ सावन
अब कर दे तू, ऐसा कुछ खास,
मन भीगे अब यूं... की याद रहे
हर पल तेरा... ये मधुमास...।

शहर समता - ब्यूरो प्रमुख

देहरादून ब्यूरो - निशा अतुल्य, -91 98378 94997
जबलपुर ब्यूरो -अनीता दुबे -91 78696 43222
जौनपुर ब्यूरो - डॉ मधु पाठक,-91 94151 69522
हैदराबाद ब्यूरो -रीना प्रदीप कुमार,-91 70935 29183
भिलाई ब्यूरो - संध्या चंदेल,-91 99934 42579
गोरखपुर ब्यूरो - सरिता सिंह - 96282 04228
दिल्ली ब्यूरो - अफरोज़ अजीज, -91 96439 68797
तिनसुकिया गोलाघाट ब्यूरो - रंजना बिनानी, - 91 94355 15469
प्रयागराज ब्यूरो - गीता सिंह 94152 13851
चंडीगढ़ सिटी - प्रभजोत कौर -91 76969 19159
इंदौर ब्यूरो - आशा जाकड़,-91 97549 69496
शिलांग ब्यूरो - नीता शर्मा -91 98630 29640
बिलासपुर ब्यूरो -संगीता बनाफर-91 70003 39148
रायपुर ब्यूरो - सीमा निगम,-91 78694 58122
कानपुर ब्यूरो - श्रद्धा श्रीवास्तव ,73765 45711
भोपाल ब्यूरो - साधना शुक्ला -91 94256 52547
जगदलपुर इकाई - स्मृति मिश्रा 'रीति'-91 93004 31143
बनारस ब्यूरो - सुनीता जौहरी, -91 6386 869 055
विश्वनाथ इकाई - सैयदा आनोवारा खातुन- 91 96787 72219
बिजनौर ब्यूरो - त्र-तुबाला रस्तोगी,-91 98971 11416
धमतरी ब्यूरो - श्रद्धा कश्यप -91 6265 018 551
बैंगलुरु ब्यूरो - अंजू भारती -91 84709 77659
गोडा ब्यूरो - सरिता कपूर -91 73768 96768
सुल्तानपुर ब्यूरो - माधवी शुचि -91 83170 45106
नोएडा ब्यूरो - प्रवीणा त्रिवेदी -91 85060 60468
पटना ब्यूरो - आ. मीना परिहार -91 70708 00416
लखनऊ ब्यूरो - अपर्णा गुप्ता --91 97933 18465
मंडला ब्यूरो - डॉ अर्चना जैन -91 93007 55500
भीलवाड़ा इकाई - डॉ राजमति पोखराना 81046 39622

संस्थापक
स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 साधना श्रीवास्तव

सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
आरएनआई नं0 UPHIN/2001/3996

उप संपादक
डा0 अरूण कुमार मिश्रा
संजय सक्सेना
रचना सक्सेना

Mo. 9005239332
Email-shaharsamta@gmail.com

स्वत्वाधिकारी/मुद्रक/प्रकाशक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा इण्डियन प्रेस (पलि.) प्रा0लि0, 36 पन्ना लाल रोड, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए, (अनन्त भवन) कर्नलगंज, इलाहाबाद से प्रकाशित।

इस अंक के प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा समस्त विवादों का निपटारा इलाहाबाद न्यायालय में ही होगा।

❖ लघुकथायें

शुभा भौमिक
कवयित्री

मां का व्रत और बेटे की जिद

सुलभा ने अपने बेटे वरुण से कहा,'जा बेटा वट वृक्ष की कुछ डंगालें काट कर ले आ क्योंकि आज वट सावित्री व्रत है, तेरे पिताजी की लंबी आयु के लिए मैंने व्रत रखा है, पूजा करनी है'। वरुण ने अपनी मां से कहा,'उसके लिए पेड़ की डंगालों को काटने की क्या जरूरत है, चलिए मैं आपको उस वट वृक्ष तक ल ` जाता हूं, आप वहीं पर पूजा कर लेना। चलिए जल्दी तैयार हो जाइए। सुलभा ने अपने बेटे से कहा,'इतनी गर्मी में मैं वहां कहां जाऊं मुझे तू कुछ डंगालें लाकर दे बस'। वरुण ने भी जिद पकड़ ली कि एक तो इतनी गर्मी, कहां उस पेड़ को पानी देकर आऊं और आप कह रहीं हैं कि उसकी डांगालें काट कर लाऊं, वह वृक्ष और कमजोर हो जाएगा। अभी धूप ज्यादा चढ़ा नहीं है, थोड़ी ठंडक है सुबह सुबह। जल्दी से तैयार हो जाइए मैं आपको लिए चलता हूं। बेटे की जिद के आगे सुलभा जी हार मान गईं और झटपट तैयार हो गईं। ज्यादा धूप चढ़ने से पहले दोनों मां बेटे वट वृक्ष की ओर चल पड़े। वट वृक्ष तक पहुंच कर देखा कुछ स्त्रियां पूजा कर रही हैं, कुछ डंगालें तोड़ रही हैं। वरुण ने कहा,' मां जल्दी-जल्दी पूजा कीजिए फिर हम घर चलते हैं'। सुलभा जी ने बेटे की बात मानकर पूरी भक्ति के साथ वट वृक्ष की पूजा की और बेटे के साथ घर की ओर चल पड़ी।

घर जाते हुए सुलभा जी को अपने बेटे पर गर्व होने लगा। जिस वटवृक्ष को लगाने के लिए कितने लोगों की मेहनत, और उसको बड़ा करने के लि ए कितना यत्न करना पड़ा होगा। आज उसके बेटे ने उसे एक बड़ी भूल होने से बचा लिया, घर जाकर बेटे से धन्यवाद कहा,'आज मुझसे बहुत बड़ी भूल हो रही थी, तुमने मुझे राह दिखा दिया। कहां हम पर्यावरण की सुरक्षा की बड़ी-बड़ी बातें करते हैं, और अपने थोड़े से आराम की खातिर पेड़ पौधों को क्षति पहुंचाते हैं, धन्यवाद बेटा'।

उसका दिल

उसके दिल में प्यार है

मां के लिए... पिता के लिए...

और तड़प है मां की बढ़ती

तकलीफों के लिए...

पिता की बढ़ती उम्र और

परेशानियों के लिए...

दूसरी तरफ-

उसके दिल में

प्यार है, सम्मान है ...

अपनी पत्नी के लिए...

पत्नी की परवाह करने वाला

पति है वो...

और,

अपनी हंसमुख,चुलबुली...

बेटी के लिए

खिलता, मचलता

पिता है वो...

अपनी परेशानियों को

नजरअंदाज करते हुए...

हर किसी को

खुशी देते हुए...

खुद

हंसते मुस्कुराते हुए...

हर किसी को

राहत देने का...

हर सम्भव प्रयास करता है...

ऐसा है वो...।

अंतर इनका उनका

अट्टालिकाओं के चकमक...

तेज... दीपमाला,

उनके पीछे... उजले चेहरे...

दिखता सभी को जगमगाते चेहरे...

पर -

असंख्य दीपमाला... चुंधियाई आंखें...

देख नहीं सकते...

सिवा अपने... किसी और को...,

उस झोपड़ी के द्वार पर रखा...

वह टिमटिमाता...

अकेला नन्हा सा दीपक...

दीपक के पीछे... अंधेरे में डूबे चेहरे...

पर -

सामने है... गहन अंधेरे को भगाता...

धुंधलका उजाला...

मगर सब कुछ...

स्पष्ट... स्वच्छ... शांत... निर्मल...।

युग परिवर्तक स्वामी विवेकानंद जी

स्वामी विवेकानंदङ किसी परिचय के मोहताज नहीं है, वह अजर अमर है, उनका नाम इस धरती से कभी मिट नहीं सकता। उनका जन्म सन् 1863, 12 जनवरी को कोलकाता में हुआ था। वे पिता श्रीमान-ङविश्वनाथ दत्तङ और माता श्रीमती- ङभुवनेश्वरी देवीङ की अनमोल संतान थे।

उनके जैसा महामानव, विप्लवी, देशभक्त, धार्मिक, युग परिवर्तक शायद ही कोई हुआ होगा। वे हर युग में युवा वर्ग के जबरदस्त प्रेरणास्रोत रहे हैं, और रहेंगे। वे बाल्यकाल से ही कुशाग्र बुद्धि वाल ` थे। उनमें ध्यान और एकाग्रता का गुण कूट- कूट कर भरा हुआ था।उनके जीवन के बारे में प्रचलित विभिन्न संस्मरणों, लेखों आदि के माध्यम से यह जाना गया है कि, वे दिल से सन्यासी होते हुए भी पूरी तरह से मातृ-पितृ भक्ति से ओतप्रोत थे, और मातृभूमि के लिए भी उनका दिल कुर्बान था।

बाल्यकाल से ही सामाजिक कुरीतियां उनके बाल मन को तकलीफ पहुंचाती थीं। बचपन से ही उन्होंने ठान ली थी कि इन कुरीतियों से भरे युग का परिवर्तन करके रहेंगे, और अपनी युवावस्था में उन्होंने यह करके दिखाया। उन्होंने समस्त मानव जगत के उत्थान के लि ए अपना जीवन समर्पित कर दिया। एक सत्पुरुष और सतगुरु में जो भी गुण होने चाहिए, वह समस्त उनमें जन्म से ही समाहित थे।

उनके दिल में सभी धर्म के लिए समान रूप से आदर-सम्मान था। उन्होंने पूरब की संस्कृति के साथ-साथ पश्चिम की अच्छाइयों को भी आदर सम्मान दिया, सभी धर्मों की अच्छाइयों को आत्मसात किया। उन्होंने कई असाध्य कार्यों को साध्य करके दिखाया।

वे परम ज्ञानी ङरामकृष्ण परमहंसङ के यशस्वी शिष्य थे। उन्होंने सारे विश्व में अपने गुरु के ज्ञान का परचम लहराया। समूचे विश्व को आध्यात्मिक और भारतीय दर्शन का अद्भुत परिचय दिया। भारत में ङरामकृष्ण मठङ और ङरामकृष्ण मिशनङ की स्थापना की। और विदेशों में न्यूयॉर्क में ङवेदांत सिटीङ और कैलिफोर्निया में ङशांति अद्वैत आश्रमङ की स्थापना भी की।ऐसे देव तुल्य, महान आत्मा, महान विभूति को साष्टांग दंडवत्...

स्वामी विवेकानंद जी के कुछ मशहूर स्लोगन--

उठो जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त ना हो जाए...

बड़ा संघर्ष होगा जीत भी उतनी ही शानदार होगी....

खुद को कमजोर समझना सबसे बड़ा पाप है...

चिंतन करो चिंता नहीं, नए विचारों को जन्म दो...

जब तक जीना तब तक सीखना, अनुभव ही जगत का सबसे बड़ा शिक्षक है...

परिवर्तनशीलता- कुदरत का नियम

वृक्ष से वह सूखा पत्ता झरकर गिरा, वहां एक दूसरे नए पत्ते की कोंपल ने जन्म लिया और धीरे-धीरे एक नया पत्ता बनकर उस स्थान के खालीपन को भर दिया। अगर वह सूखा पत्ता नहीं झरता, वृक्ष के और भी पत्ते अगर समय पर न झरे, तो उस स्थान पर नई पत्तियों की कोपलें कैसे आएंगी और अगर वृक्ष सूखी बेजान पत्तियों से भरी रहेगी तो उसकी उस जीवटता का क्या होगा, जो हमेशा हरी भरी हरियाली बिखेर कर आंखों को और मन को सुकून देती है।

कुदरत अपने नियमों से चलता है। उसे पता है, किसके झरने का समय आ चुका है और किसके पनपने का वक्त हो गया है, न एक पल इधर न एक पल उधर। समय खत्म हुआ, बस मिट्टी में ही मिल गया, मिट्टी ही बन गया और उसी मिट्टी से इस प्रकृति का ही एक अंश बनकर, फिर कई बार, कई रूपों में अवतरित होकर इस प्रकृति को, इस सृष्टि को चलायमान रखने की अपनी भूमिका को निभाते गया।

कोई शिकायत करे या कोई स्वीकार करे, इससे उसे कोई फर्क नहीं पड़ता, उसने तो हमेशा इंसाफ ही किया है। इस प्रकृति का कोई भी दृष्टिगोचर हिस्सा हमेशा के लिए नहीं रहता। हर एक के नष्ट होने की समय सीमा तय है, और इसी तरह हर एक के पनपने का भी समय निश्चित है। कुदरत इस सृष्टि को सुंदर, सजीव बनाए रखने के लिए ही समय-समय पर परिवर्तन करते रहता है, जिससे इसकी सजीवता, जीवटता और सुंदरता बरकरार रहे।

नई जिंदगी की शुरुआत

बिल्लू और मोनू आज अपने दादा दादी के पास जा रहे थे। वो बहुत खुश और उत्साहित थे। काफी दिनों से वह उनसे मिल नहीं पाए थे। स्कूल में छुट्टियां चल रही थी। इसके चलते उन्हें मम्मी पापा के साथ दादा दादी के पास जाने का अवसर प्राप्त हुआ। दादा दादी के गांव पहुंचने के बाद वे सभी घोड़ा गाड़ी पर सवार होकर उनके घर की ओर चल पड़े। उनके चेहरे की खुशी देखते ही बन रही थी।

उनके पापा रोहन और मम्मी सोनिया बातें कर रहे थे कि अब गांव में कुछ बचा भी नहीं है, बस एक छोटे से घर में मां बाबूजी रह रहे हैं । उनसे बात करके उस जमीन को घर को बेचकर उन्हें भी शहर में अपने घर ले जाएंगे। उनकी बातों को सुनकर बिल्ल ू और मोनू की खुशी का ठिकाना ना रहा। उनकी मां सोनिया बोली देखना दादा दादी को तंग मत करना वह बुजुर्ग है न। उनकी बातें मानकर हमें चलना होगा। उनके दिल को ठेस पहुंचे ऐसी बातें हमें नहीं करनी हैं। बच्चों ने भी हां में हां मिलाया। तब तक दादा दादी का घर आ चुका था। दादा दादी उनका ही इंतजार कर रहे थे। काफी दिनों के बाद इस तरह मिलकर सभी बहुत खुश थे।

कुछ दिनों तक बहुत मौज मस्ती के दिन गुजारे। मौका देखकर रोहन और सोनिया ने उनको शहर चलकर उनके साथ रहने की बात बोल दी, पर रोहन के मां बाबूजी गांव में रहने के आदी हो गए थे। वो शहर जाने के लिए सकुचा रहे थे। फिर यह भी सोचने लगे कि बढ़ती उम्र में उनको सहारे की भी जरूरत होगी। उनकी बहू सोनिया ने भी आग्रह किया कि उनके साथ रहने के लिए शहर चलें। उन्होंने भी सकुचाते हुए हामी भर दी।

दादा दादी के शहर चलने और अपने साथ रहने की बात सुनकर बच्चों की खुशी का ठिकाना ना रहा। कुछ ही दिनों में वह घर और जमीन बेचकर सब सामान पैक कर एक साथ सभी मिलकर शहर की ओर चल पड़े, एक नई जिंदगी की शुरुआत लिये...।